- जिले के सभी विभागों, शासकीय कार्यालयों का पर्यवेक्षण कलेक्टर करता है।

जिले में कई विभाग होते हैं, जैसे- शिक्षा विभाग, पुलिस विभाग, वन विभाग, कृषि विभाग, राजस्व विभाग, स्वास्थ्य विभाग आदि। इन सभी विभागों में राज्य सरकार द्वारा अधिकारी व कर्मचारी नियुक्त किये जाते हैं, ये सभी कलेक्टर के कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं।

यद्यपि कलेक्टर महत्वपूर्ण अधिकारी है किन्तु किसी कानून, नियम, निर्देश आदि जो राज्य या केंद्र सरकार द्वारा जारी किये गए हों, को ये बदल नहीं सकते, और स्वयं कोई कानून भी नहीं बना सकते।

जिले में न्यायिक व्यवस्था

यद्यपि कलेक्टर को दंडाधिकारी के रूप में कुछ न्यायिक अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी प्रत्येक जिले में अलग से व स्वतंत्र न्यायिक व्यवस्था है। जिले के सभी न्यायालय राज्य के उच्च न्यायालय की देखरेखमें

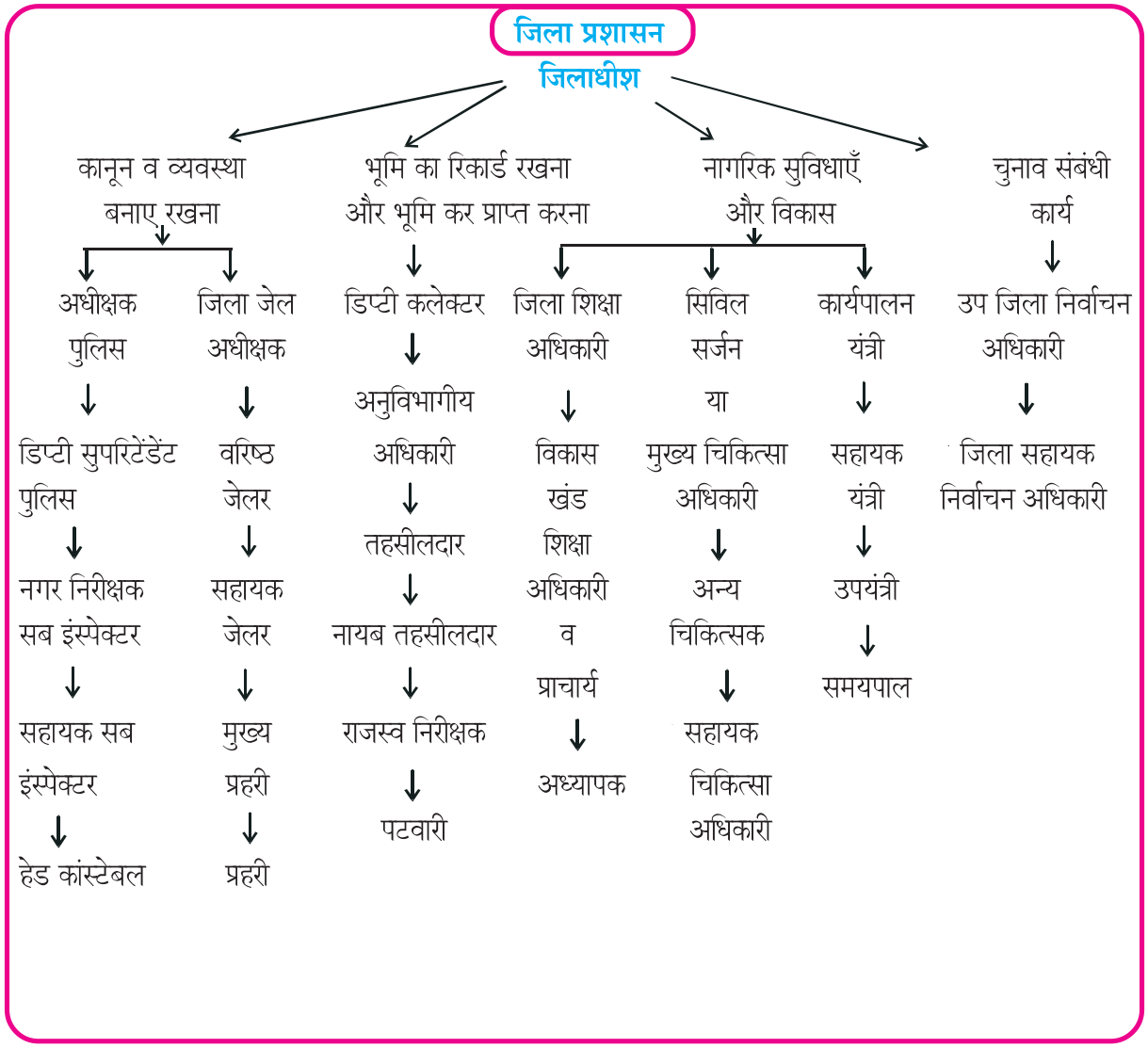

काम करते हैं। हमारे मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय जबलपुर में तथा इसकी खंडपीठ इंदौर व ग्वालियर में स्थापित है।

चोरी, मारपीट, हत्या आदि फौजदारी मामले कहलाते हैं। इनकी सुनवाई फौजदारी न्यायालयों में होती है। जमीन-जायदाद, रुपये- पैसे आदि के लेन-देन संबंधी विवाद दीवानी मामले कहलाते हैं। इनकी सुनवाई दीवानी न्यायालयों में होती है। जिले की न्याय व्यवस्था का ढांचा इस प्रकार है-

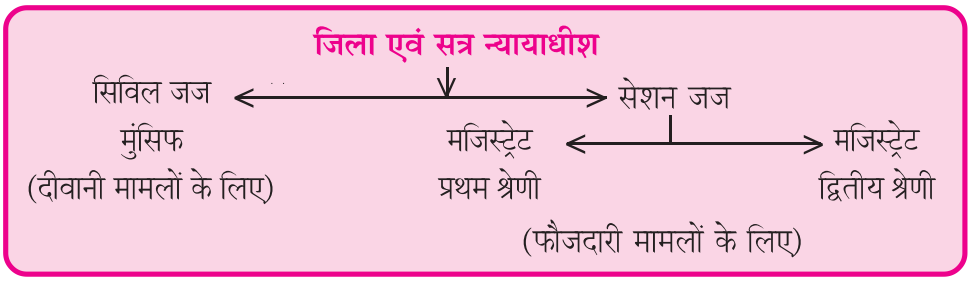

भूमि संबंधी ब्यौरे अब कम्प्यूटरीकृत किये जा रहे हैं। जिले के लोगों के विकास के लिए शिक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग महत्वपूर्ण हैं।

शिक्षा के पर्यवेक्षण के लिए जनशिक्षा केंद्र, जनपद शिक्षा केंद्र तथा जिला शिक्षा केंद्रों की स्थापना की गई है। इनमें जनशिक्षक, विकासखंड शैक्षिक समन्वयक, समन्वयक; जनपद शिक्षा केंद्र, जिला समन्वयक एवं प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान कार्य कर रहे हैं।

- जिला भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण इकाई है।
- जिला प्रशासन का मुखिया 'कलेक्टर' अथवा जिलाधीश कहलाता है।
- जिले में गाँव व तहसील छोटी इकाइयाँ हैं।
- जिले में कानून व व्यवस्था बनाए रखना कलेक्टर का प्रमुख कार्य है।
- मध्यप्रदेश का उच्च न्यायालय, जबलपुर में तथा इसकी खंडपीठ, इंदौर व ग्वालियर में हैं।
- जिले में शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग, वन विभाग, कृषि विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग व राजस्व विभाग महत्वपूर्ण होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) जिला प्रशासन का मुखिया क्या कहलाता है?

(ब) जिले में स्थापित महत्वपूर्ण दो विभागों के नाम बताइये।

(स) राज्य को जिलों व तहसीलों में क्यों बाँटा गया है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) कलेक्टर के कोई चार प्रमुख कार्य लिखिए।

(ब) दीवानी मामले क्या हैं? इनका निपटारा किस न्यायालय द्वारा किया जाता है।

(स) फौजदारी मामले क्या हैं? इनका निपटारा किस न्यायालय द्वारा किया जाता है।

(द) शिक्षा के पर्यवेक्षण के लिए जिले में क्या व्यवस्था है?

3. सही जोड़ी बनाइए-

	क	ख
अ.	शिक्षा विभाग	सब इन्सपेक्टर
ब.	राजस्व विभाग	चिकित्सक
स.	पुलिस विभाग	नायब तहसीलदार
द.	चिकित्सा विभाग	सहायक यंत्री
य.	सिंचाई विभाग	विकास खंड शिक्षा अधिकारी

प्रोजेक्ट कार्य-

- इसी अध्याय के जिला प्रशासन संबंधी चार्ट में दर्शाये कौन-कौन अधिकारी/कर्मचारी आपके क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, उनके पदनामों की सूची अपने शिक्षक की सहायता से तैयार करें।

❖❖❖❖

पाठ 24

भारत की प्राकृतिक वनस्पति एवं जीव-जन्तु

आइए सीखें

- भारत की प्राकृतिक वनस्पति के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से हैं?
- भारत में वनों का क्षेत्रीय वितरण कैसा है?
- भारत में वन्य जीवन और उनके क्षेत्रीय वितरण को जानना
- प्रमुख भारतीय राष्ट्रीय उद्यानों के नाम व उनकी स्थिति।

जलवायु की दशाओं और प्राकृतिक वनस्पति में घनिष्ट संबंध पाया जाता है। **विविध प्रकार के वन, घास भूमियों और झाड़ियों को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।** हमारे देश की वनस्पति को पाँच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है-

1. उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन
2. उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन
3. कंटीले वन तथा झाड़ियां
4. ज्वारीय वन
5. पर्वतीय वनस्पति

1. उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वन

हमारे देश में उष्ण तथा आर्द्र जलवायु दशाओं वाले प्रदेश में जहां 200 से.मी. से अधिक औसत वर्षा होती है सदा हरित वनस्पति पाई जाती है।

क्षेत्र- इस प्रकार के वन पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढालों, पश्चिमी बंगाल के मैदानों, उड़ीसा, उत्तर-पूर्वी भारत और अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में पाए जाते हैं।

विशेषताएं-

- इन वनों के वृक्षों की पत्तियां बड़ी मोटी और चिकनी होती हैं।
- वृक्षों की ऊँचाई अधिक होती हैं।
- विविध प्रकार के वृक्ष एक साथ मिलते हैं।
- ये वन घने और सदा हरे-भरे रहते हैं।

मुख्य वृक्ष- आबनूस, महोगनी, रोजवुड, बांस, नारियल, ताड़, रबर आदि।

2. उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन

जिन भागों में 75 से 200 से.मी. वर्षा होती है उन क्षेत्रों में प्रमुख रूप से पर्णपाती वन पाए जाते हैं। इन्हें मानसूनी वन भी कहते हैं। इनको दो उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है- (1) आर्द्र पर्णपाती वन तथा (2) शुष्क पर्णपाती वन। पश्चिमी घाट के पूर्वी ढालों पर प्रायद्वीप के उत्तर पूर्वी भागों में, शिवालिक पहाड़ियों पर आर्द्र पर्णपाती वन मिलते हैं जबकि शुष्क पर्णपाती वनों का विस्तार भारत के बहुत बड़े क्षेत्र में है।

विशेषताएं-

- वृक्ष मध्यम ऊँचाई के होते हैं।
- वर्ष में एक बार ये वृक्ष अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। केवल आर्द्र पर्णपाती वनों के वृक्षों में यह क्रिया वर्ष भर चलती रहती है।
- एक ही जाति के वृक्ष एक साथ एक ही क्षेत्र में मिलते हैं. ये बहुत उपयोगी वन है।

मुख्य वृक्ष- सागौन, साल, शीशम, चन्दन आदि।

3. कंटीले वन तथा झाड़ियाँ-

जिन भागों में 75 से.मी. से कम वर्षा होती है वहां इन वनों का विस्तार है।

क्षेत्र- देश के उत्तर-पश्चिमी भाग, पश्चिम मध्यप्रदेश, राजस्थान, सौराष्ट्र, बुन्देलखंड और हरियाणा।

विशेषताएं-

- अधिकांश वृक्षों में कांटे होते हैं।
- वृक्षों की ऊँचाई कम होती है।
- वृक्ष दूर-दूर होते हैं।
- पत्तियां छोटी और जड़ें लंबी होती है।

प्रमुख वृक्ष- कीकर, बबूल, खैर, खजूर, बेर, नागफनी और कंटीली झाड़ियां।

4. ज्वारीय वन -

समुद्र तट के सहारे नदियों के डेल्टाओं में ज्वारीय वन पाए जाते हैं। ये खारे व ताजे पानी में एक साथ पनपते हैं। सुन्दरवन इसका बड़ा क्षेत्र है। ये वन पश्चिम बंगाल में गंगा के मुहाने पर पाए जाते हैं। मैंग्रोव और सुन्दरी मुख्य वृक्ष है। ज्वार आने पर समुद्र का खारा जल इन वनों में भर जाता है, और भाटा आने पर पानी उतर जाता है जिससे यहाँ की भूमि दलदली रहती है। ये वर्षभर हरे-भरे और घने होते हैं।

5. पर्वतीय वनस्पति -

हिमालय की तलहटी से लेकर ऊंचाई तक विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। ऊँचाई के अनुसार इनको निम्न पेटियों में विभाजित किया गया-

(अ) **आर्द्र पर्वतीय वन-** सदाबहार चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं। ओक, चेस्टनट मुख्य वृक्ष हैं।

(ब) **समशीतोष्ण कटिबन्धीय चीड़ के वन-** उत्तरी-पूर्वी भारत में ऊँचाई पर जहां अधिक वर्षा होती है, ये वन पाए जाते हैं। चीड़ मुख्य वृक्ष है।

(स) **शंकुधारी वन-** 1600 से 3500 मीटर ऊंचाई पर शंकुधारी वन पाए जाते हैं, जिनमें चीड़, सीडर, सिल्वर-फर, स्प्रूस और देवदार के वृक्षों की प्रधानता है।

(द) **अल्पाइन वन-** सबसे अधिक ऊँचाई पर शीतोष्ण शंकुधारी वन पाए जाते हैं। वृक्षों की पत्तियां नुकीली शाखाएं झुकी हुई होती है। सिल्वर फर, चीड़, बर्थ, झाड़ियाँ व घास भूमियां पाई जाती हैं। हिमालय की ऊँची ढलाने जाड़े में हिम से ढकी रहती हैं। फरवरी-मार्च में जब हिम पिघलती है तो यहाँ घास उगती है। इन्हें 'बुग्याल' कहते हैं।

जीवजन्तु

भारत में जितनी विविधता वनस्पति में पाई जाती है उतनी ही विविधता जीव जन्तुओं में भी पाई जाती है। वनस्पति जगत से प्राप्त भोजन या ऊर्जा पर ही जीव जन्तुओं का जीवन निर्भर है। अलग-अलग वनस्पति प्रदेशों में अलग-अलग जीव जन्तु पाए जाते हैं। ऊँचे पर्वतीय भागों में याक, मरुस्थलों में ऊँट, कच्छ के रन में जंगली गधे, पर्वतीय ढालों और दलदली भागों में गेंडे, गिर के वनों में सिंह और असम, केरल और कर्नाटक में हाथी, पर्वतीय ढालों की घास भूमियों में भेड़-बकरी, पतझड़ वनों में विविध प्रकार के हिरण, जंगली भैंसे, नीलगाय, तेन्दुआ, विभिन्न प्रकार के बन्दर आदि मिलते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु तथा मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। हमारे देश में अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी भी पाए जाते हैं।

वन्य जीवों को संरक्षण प्रदान करने के लिए हमारे देश के विविध भागों में राष्ट्रीय उद्यान, वन्य प्राणी अभ्यारण्य और चिड़िया घर बनाए गए हैं। जिनमें कान्हा-किसली (मध्यप्रदेश), काजीरंगा (असम) गिर (गुजरात), कार्बेट (उत्तराखंड) बांधवगढ़ (मध्यप्रदेश) पेरियर (केरल) रणथम्भौर (राजस्थान) आदि प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्य हैं।

- भारत में पाँच प्रकार की वनस्पति पाई जाती है- ऊष्ण कटिबंधीय वर्षा वन, उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन, कंटीले वन तथा झाड़ियां, ज्वारीय वन एवं पर्वतीय वनस्पति।
- विभिन्न प्रकार के वन, घास भूमियाँ और झाड़ियों को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।
- भारत के विभिन्न भागों में शेर, तेन्दुए, हाथी, ऊँट, याक, गेंडे, जंगली भैंसे, हिरण, लंगूर, बंदर, सूअर आदि वन्य जीव तथा हजारों प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी पाए जाते हैं।
- बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु तथा मोर राष्ट्रीय पक्षी है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) प्राकृतिक वनस्पति किसे कहते हैं?

(ब) मानसूनी वनों की दो विशेषताएं लिखिए।

(स) भारत में पाये जाने वाले किन्हीं दो वनों के नाम लिखिए।

(द) पर्वतीय वनों की दो पेटियों के नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) भारत में कितने प्रकार की वनस्पति पाई जाती हैं ? किन्हीं दो का वर्णन कीजिए।

(ब) भारत में कौन-कौन से जीवजन्तु पाए जाते हैं ?

(स) 'वनों का महत्व' विषय पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।

3. निम्नलिखित दो समूहों की आपस में सही जोड़ी बनाइए-

	अ. वनस्पति के प्रकार	ब. मुख्य वृक्ष
(अ)	उष्ण कटिबन्धीय सदाहरित वन	सुन्दरी वृक्ष
(ब)	उष्ण कटिबन्धीय पर्णपाती वन	चीड़ के वृक्ष
(ग)	कटीले वन तथा झाड़ियाँ	सागौन वृक्ष
(घ)	ज्वारीय वन	बबूल वृक्ष
(प)	पर्वतीय वन	महोगनी वृक्ष

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(अ) हमारा राष्ट्रीय पशु ..... है।

(ब) हमारा राष्ट्रीय पक्षी ..... है।

(स) नदियों के डेल्टाओं में ..... वन पाये है।

(द) गिर के वनों में ..... पाया जाता है।

(इ) मरूस्थल का मुख्य पशु ..... है।

5. निम्नलिखित में अन्तर बताइये-

(अ) सदाबहार वन और पर्णपाती वन

(ब) कंटीले वन और ज्वारीय वन

6. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित की स्थिति दर्शाइए-

कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, गिर राष्ट्रीय उद्यान, रणथम्भौर पक्षी अभ्यारण्य, ज्वारीय वन।

प्रोजेक्ट कार्य

- भारत में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के वन्य पशु तथा पक्षियों के चित्रों का संग्रह कीजिए।
- अपने जन्म दिन पर या किसी उत्सव पर कम से कम एक पौधा लगाकर और उस पर अपने नाम की पट्टिका लगाएँ।

❖❖❖❖

पाठ 25

भारत की प्रमुख फसलें

आइए सीखें

- भारत में कृषि का क्या महत्व है?
- भारत की प्रमुख फसलें कौन-कौन सी है?
- देश में पाई जाने वाली मिट्टी एवं फसलों का वितरण किस प्रकार है?

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत की 70 प्रतिशत से ज्यादा जनसंख्या गांवों में निवास करती हैं। उनकी जीविका एवं भरण-पोषण का मुख्य आधार कृषि हैं। देश की अर्थव्यवस्था का मूल आधार भी कृषि है। अनेक उद्योगों को कच्चा माल कृषि से मिलता है। कृषि उत्पादों पर आधारित इन उद्योगों का राष्ट्रीय आय में भारी योगदान है तथा इनमें बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देने की संभावनाएँ छिपी हैं। यही कारण है कि भारत को कृषि प्रधान देश कहा जाता है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय कृषि का बड़ी तेजी से विकास हुआ है। यह सब देश के परिश्रमी किसानों, अनुकूल जलवायु और उपजाऊ मिट्टी के कारण संभव हो सका है। संसार के अधिकतर देशों में साल में केवल एक ही फसल पैदा की जाती है। किन्तु भारत में दो फसलों की पैदावार होती हैं। भारत में भी अब वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग किया जाने लगा है। संसाधनों का उपयोग व आवश्यकतानुसार रासायनिक खादों तथा अधिक उपज देने वाले बीजों के उपयोग से भरपूर फसल होती है। विभिन्न तरह के कीड़ों, नाशक जीव, फफूंद तथा खरपतवार से फसलों को बचाने के लिए अब कीटनाशक, फफूंदनाशी तथा खरपतवार नाशक दवाएं उपलब्ध हैं। उर्वरता बनाए रखने तथा बढ़ाने के लिए हरी तथा गोबर जैसी जैव खादों के साथ-साथ खेतों में रासायनिक उर्वरकों का उचित मात्रा में उपयोग के साथ ही साथ नये-नये कृषि उपकरणों का उपयोग किया जा रहा है।

प्रमुख फसलें

भारत के अलग-अलग भागों में अलग-अलग फसलें होती हैं। किसी भाग में गन्ना एवं चावल अधिक होता है तो कहीं दालें अधिक होती हैं, तो कहीं गेहूँ, चना तो कहीं मक्का, ज्वार अधिक होती है।

फसलें पानी व तापमान की आवश्यकतानुसार अलग-अलग समय में बोई जाती हैं। बोवाई के आधार पर फसलों को तीन वर्गों में बांटा गया है -

ऋतु	फसल का प्रकार	फसल का नाम	अवधि
वर्षा ऋतु	खरीफ	धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, मूँगफली, उड़द, कपास, सोयाबीन, सूरजमुखी, कोदों, तिल, अरहर, मूँग, भिंडी,ग्वार, तम्बाकू आदि ।	जून-जुलाई माह में (वर्षा के प्रारंभ में) बोई जाती है और सितम्बर-अक्टूबर माह में काट ली जाती है ।
शीत ऋतु	रबी	गेहूं, जौ, चना, सरसों, गन्ना, अलसी, मसूर, राई, मटर, जई, आलू, गाजर, मूली, टमाटर, गोभी, पालक आदि ।	अक्टूबर-नवंबर माह में बोई जाती है और गर्मी के प्रारंभ में मार्च-अप्रैल माह में काट ली जाती है ।
ग्रीष्म ऋतु	जायद	सब्जियां, ककड़ी, खरबूज, तरबूज, मूँग आदि ।	ये गर्मी के प्रारंभ (मार्च-अप्रैल) में बोई जाती है तथा वर्षा के प्रारंभ (जून-जुलाई) में काट ली जातीहै।

भारत की लगभग 65-70 प्रतिशत जनसंख्या जीविकोपार्जन हेतु कृषि पर निर्भर है । हमारे देश की जलवायु, भौगोलिक परिस्थितियों एवं मिट्टी खेती के लिए अनुकूलता प्रदान करती है, जिसके फलस्वरुप हमारे देश में वर्ष भर विभिन्न प्रकार की फसलें उगाई जा सकती है जो कि अन्य स्थानों पर संभव नहीं है।

वर्षा काल के दौरान देश के विभिन्न भागों में जून-जुलाई से लेकर सितम्बर-अक्टूबर तक धान, तम्बाकू, सूरजमुखी, ज्वार, मक्का, बाजरा, सोयाबीन, अरहर, मूंग, उड़द, तिल, कपास, मूँगफली इत्यादि फसलें उत्पादित की जाती है, इन्हें **खरीफ मौसम की फसलें** कहा जाता है । इसी प्रकार अक्टूबर-नवम्बर से लेकर मार्च -अप्रैल तक के समय में गेहूँ, जौ, सरसों, चना, मटर, अलसी, मसूर, गन्ना इत्यादि फसलें मुख्य रूप से उत्पादित की जाती है, इन्हें **रबी मौसम की फसलें कहा जाता है** । मार्च -अप्रैल से लेकर जून-जुलाई तक गर्म मौसम में बेल वाली फसलें जैसे-गिलकी, तोरई, लौकी, तरबूज, ककड़ी, कद्दू, करेला, भिण्डी एवं ग्रीष्मकालीन मूँग इत्यादि उगाई जाती है, इन्हें **जायद की फसलें** कहा जाता हैं।

गर्म एवं उष्ण जलवायु में काजू, नारियल, खजूर, अंगूर इत्यादि फलों व समान तापक्रम एवं आर्द्रता वाले क्षेत्रों में आम, अमरुद, केला, अनार, पपीता, संतरा, अनानास इत्यादि फलों तथा ठण्डी जलवायु वाले (उत्तरी भारत) क्षेत्रों में सेवफल, नाशपाती, आड़ू, बादाम इत्यादि फलों को वर्षभर देश में उत्पादित किया जा सकता है। विभिन्न पुष्पीय पौधों का उत्पादन भी वर्ष भर किया जा सकता है। अतः हमारे देश में संपूर्ण वर्ष भर किसी न किसी फसल को उगाया जा सकता है। इसी कारण खेती पर निर्भरता अधिक है।

इससे स्पष्ट होता है कि वर्ष के 365 दिन हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में कोई न कोई फसल अनिवार्य रूप से उगायी जा सकती है व देश की अधिकांश जनसंख्या विभिन्न कृषि उत्पादन से संबंधित कार्यो जैसे जुताई, निंदाई, गुड़ाई, कटाई, फल व सब्जियों का परिरक्षण, स्थानान्तरण या कृषि आधारित उद्योगों जैसे-पशुपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी, मत्स्यपालन इत्यादि में वर्षभर संलग्न रहते है । इसी कारण कृषि देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है ।

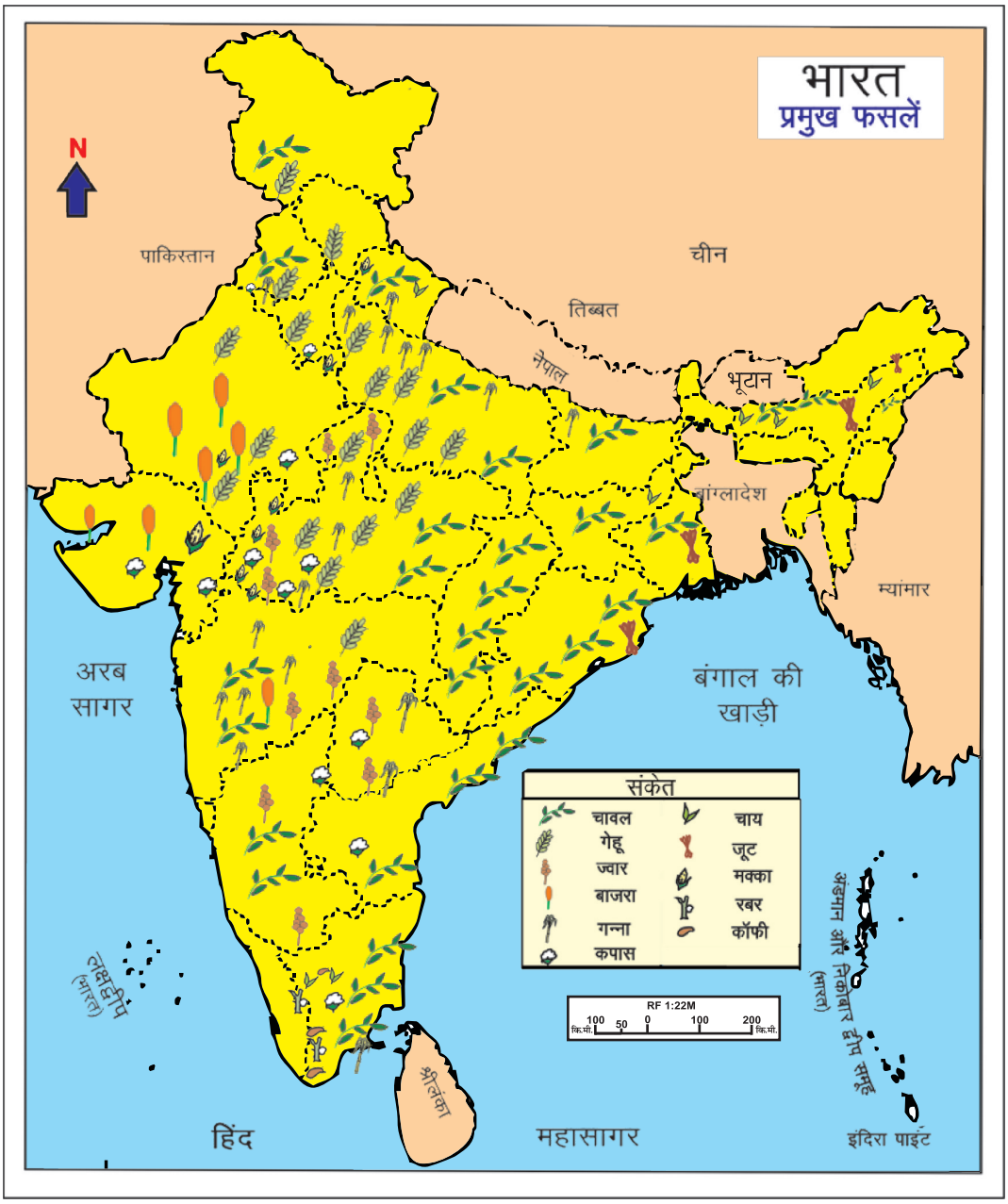

मिट्टी एवं फसलें

हम मुख्यतः भोजन, वस्त्र के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि उपजों व फसलों के लिए मिट्टी एक महत्वपूर्ण कारक है। विभिन्न फसलें तिलहन, पेय पदार्थ, सब्जियाँ, फल, फूल आदि मिट्टी में ही उगाए जाते है। भूवैज्ञानिक संरचना, धरातलीय उच्चावच, जलवायु तथा प्राकृतिक वनस्पति की विभिन्नता के कारण भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टीयाँ मिलती हैं। मृदा परिच्छेदिका संस्तरों के विकास तथा जलवायु दशाओं से इनके अंतसंबंध के आधार पर भारत में निम्नलिखित प्रकार की मिट्टी पाई जाती है -

1. **जलोढ़ मिट्टी -** यह मिट्टी नदियों द्वारा निक्षेपित महीन गाद से निर्मित होती है। यह मिट्टी भारत के उत्तरी मैदान में गंगा, सतलज व ब्रहापुत्र के मैदानों और प्रायद्वीपीय भारत के महानदी, गोदावरी, कृष्णा

तथा कावेरी नदियों के डेल्टाई भाग व तटवर्ती क्षेत्रों में मिलती है। उत्तरप्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, असम, राजस्थान व मध्यप्रदेश राज्यों में यह पायी जाती है। इन क्षेत्रों की मुख्य फसलें गेहूँ, चावल, गन्ना, जूट, सरसों, बाजरा आदि है।

2. काली मिट्टी– यह मिट्टी ज्वालामुखी के लावा निक्षेपण से बनी है, जो मुख्यतः महाराष्ट्र, दक्षिणी एवं पूर्वी गुजरात, पश्चिमी मध्यप्रदेश, उत्तरी कर्नाटक, उत्तरी आंध्रप्रदेश आदि राज्यों में पायी जाती हैं। इस मिट्टी में कपास, मूँगफली, गन्ना, तम्बाकू, दलहन (मूँग, उड़द, अरहर, चना, मटर) तिलहन (सूरजमुखी, तिल, मूँगफली, अरण्डी) आदि फसलें होती है।

3. लाल मिट्टी - यह मिट्टी आग्नेय शैल से बनी है। यह मिट्टी तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, दक्षिणी पूर्वी महाराष्ट्र, पूर्वी आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा एवं झारखण्ड में पायी जाती हैं। यह मिट्टी कम उपजाऊ है, यहाँ पर मोटे अनाज मक्का, ज्वार, धान, कोदों तथा दलहन (मोठ, मूँग, उड़द) एवं तिलहन की कृषि की जाती है।

4. लेटेराइट मिट्टी - यह मिट्टी कम उपजाऊ होती है। यह मिट्टी पश्चिमी घाट तथा इलायची की पहाड़ियों, पूर्वी घाट व छोटा नागपुर, तमिलनाडु और गुजरात के कुछ भागों में पायी जाती हैं। इन प्रदेशों में धान तथा दलहन एवं तिलहन, चाय, काजू और रबर की कृषि की जाती है।

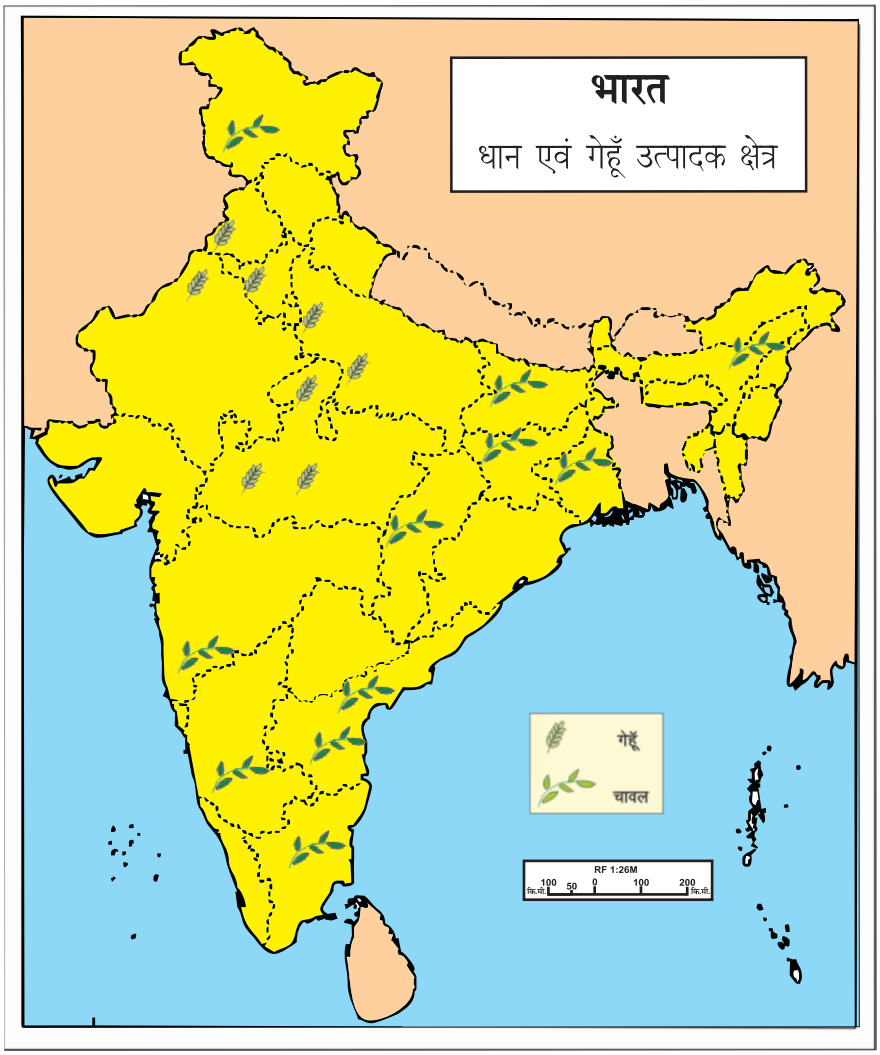

5. पर्वतीय मिट्टी - पर्वतीय प्रदेश में पायी जाने वाली मिट्टी की गहराई बहुत कम होती है। यह मिट्टी मुख्यतः हिमालय क्षेत्र, उत्तरी पूर्वी भारत, पहाड़ी क्षेत्रों, पश्चिमी एवं पूर्वी घाट व प्रायद्वीपीय भारत में नीलगिरि, सतपुड़ा पहाड़ियों में पायी जाती है। यहाँ पर बागाती फसलों की कृषि की जाती है। जिसमें चाय, कहवा, मसालें एवं फल (सेव, अखरोट, नाशपाती, आड़ू आदि) मुख्य है।

6. मरूस्थलीय मिट्टी - इस मिट्टी को बलुई मिट्टी भी कहते है। यह मिट्टी पश्चिमी राजस्थान, दक्षिणी पंजाब, दक्षिणी हरियाणा तथा गुजरात में पायी जाती है। इन क्षेत्रों में मोटे अनाज जैसे ज्वार- बाजरा, जौ, सरसों, चना, कपास, मोठ, लोबिया, मूँग, खजूर, बेर आदि की खेती होती है। लेकिन जहाँ सिंचाई की सुविधा है वहाँ पर गेहूँ की कृषि भी की जाती है।

प्रमुख खाद्यान्न फसलें- गेहूं, धान और दालें आदि खाद्यान्न फसलें हैं। यह सामान्यत: प्रतिदिन के भोजन में प्रयोग में लायी जाती हैं। इसके अलावा ज्वार, बाजरा और मक्का भी खाद्यान्न फसलें हैं। मानचित्र में प्रमुख खाद्यान्न/फसलों का वितरण बताया गया है। चावल पूर्वी भारत एवं दक्षिणी भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल हैं जो पं. बंगाल, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश, केरल, तमिलनाडु, बिहार, असम में पैदा होता है। गेहूं, उत्तरी भारत की मुख्य खाद्यान्न फसल है। प्रमुख उत्पादक राज्य है- उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और मध्यप्रदेश।

ज्वार मुख्य रूप से महाराष्ट्र, **तेलंगाना**, कर्नाटक, गुजरात और मध्यप्रदेश में उगायी जाती हैं। बाजरा, राजस्थान और गुजरात की मुख्य फसल है। मक्का की फसल पंजाब, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश और आंध्रप्रदेश में उगायी जाती है।

नीचे भारत का नक्शा दिया गया है इस नक्शें में वह राज्य दिखाएं गये हैं जहां गेहूं व धान की खेती की जाती है। दिए गए नक्शें को देखकर उन राज्यों के नाम लिखो जहां-जहां गेहूं व धान उगाया जाता है।

गेहूं उत्पादक राज्य	**धान उत्पादक राज्य**
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

दालें- यह हमारे भोजन में प्रोटीन का प्रमुख स्रोत है। चना, अरहर अथवा तुअर, मसूर, उड़द, मूंग तथा मटर दालों की प्रमुख किस्में हैं। इन सभी दालों को उन क्षेत्रों को छोड़कर जहां वर्षा बहुत अधिक होती है, पूरे भारतवर्ष में उगाया जाता है। दाल के पौधे फलीदार होते हैं। ये जिस मिट्टी में बोये जाते हैं उसकी उर्वरता को बनाए रखने में सहायक होते हैं।

अखाद्यान्न फसलें

तिलहन- मूंगफली, सरसों, तिल, अलसी, अरंडी, कुसुम, सूरजमुखी और सोयाबीन तिलहन के अंतर्गत आते हैं। इन सभी के बीजों से तेल निकाला जाता है। पूर्वी तथा उत्तरी भारत में सरसों, पश्चिमी भारत में मूंगफली, मध्य भारत में सोयाबीन तथा दक्षिण भारत में नारियल के तेल का प्रयोग खाना बनाने में किया जाता है। परंतु मूंगफली और सूरजमुखी का तेल खाना बनाने में पूरे भारत में प्रचलित है।

रेशेदार फसलें- कपास तथा जूट दो प्रमुख फसलें हैं जिनसे रेशें प्राप्त होंते हैं। दक्षिण पठार की काली मिट्टी में कपास का पौधा अच्छी तरह उगता है तथा यहां पर्याप्त ताप व खिली-धूप भी मिलती है। महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश व गुजरात में कपास होता है। पटसन या जूट की खेती पश्चिम बंगाल में गंगा के डेल्टा में मुख्य रूप से की जाती है।

रोपण फसलें- चाय, कहवा भारत में उगाई जाने वाली दो प्रमुख पेय फसलें हैं। चाय आसाम की ब्रह्मपुत्र और सूरमा घाटियों में पश्चिम बंगाल के हिमालय के ढालों पर, कांगड़ा कुमाऊ और दक्षिण भारत की नीलगिरि के पहाड़ी ढालों पर उगाई जाती है। भारत संसार के प्रमुख चाय निर्यातक देशों में से एक है।

कहवा, उष्णकटिबंधीय उच्च भूमि की उपज है। कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। कहवा के कुल उत्पादन का लगभग तीन चौथाई भाग निर्यात किया जाता है।

गन्ने के पौधे के लिए उच्च तापमान, सिंचाई के लिए अधिक और अच्छे जल निकास वाली उपजाऊ मिट्टी की आवश्यकता होती है। हमारे देश के बहुत से भागों में गन्ने की खेती की जाती है जिसमें उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश आदि प्रमुख उत्पादक राज्य है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

(अ) भारत में कृषि का क्या महत्व है?

(ब) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय कृषि का तेजी से विकास हुआ, क्यों?

(स) भारत में बोई जाने वाली खरीफ, रबी और जायद फसलों के दो-दो नाम लिखें।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(अ) भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाने वाली मिट्टियों का वर्णन करते हुए उनमें बोई जाने वाली फसलों को बताइए।

3. भारत के मानचित्र में चावल, गेहूं, गन्ना, कपास तथा जूट उत्पादक राज्यों को दर्शाइए :-

पाठ 26

भारत के खनिज, शक्ति के साधन और उद्योग

आइए सीखें

- भारत में खनिज पदार्थ एवं शक्ति के साधनों का वितरण किस प्रकार है?
- खनिज पदार्थों की उपयोगिता क्या है?
- खनिज पर आधारित उद्योग कौन-कौन से हैं?

प्रकृति ने हमें संसाधन नि:शुल्क प्रदान किये हैं, जिनका उपयोग हम दैनिक जीवन में करते हैं। मानव ने खनिजों के अनेक उपयोग जान लिए हैं। इनसे हम तरह-तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाते हैं। देश के औद्योगिक विकास में इनका महत्वपूर्ण हाथ है। खनिज पदार्थ हमारी पृथ्वी के गर्भ (अन्दर) में बहुत गहराई तक छिपे हुए तथा समुद्र के अध: स्तल के नीचे भी दबे हुए हैं। इस वैज्ञानिक युग में इन खनिज पदार्थों का महत्व बढ़ता जा रहा है।

हमारा देश खनिज पदार्थों में काफी सम्पन्न है। यहां लोहा, मैंगनीज, अभ्रक, तांबा, सीसा, जस्ता बाक्साईट, सोना आदि खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इनके अलावा शक्ति के साधन हैं, जैसे कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस आदि।

आइये अब हम हमारे देश में कौन-कौन से खनिज पदार्थ कहां-कहां पर निकलते हैं, उनके बारे में जाने-

खनिज पदार्थ तक पहुंचने के लिए भूपर्पटी (भूमि) में एक बड़ा और गहरा छेद किया जाता है तथा सुरंगे बनाकर खनिज निकाले जाते हैं। ऐसी खान को खनिकूप या शेफ्ट माइन कहते हैं।

हमारे देश में कई खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। इनके वितरण को जानने के लिए भारत के खनिज पदार्थ के मानचित्र को ध्यान से देखिये तथा मानचित्र को देखकर इन खनिज पदार्थों की सूची बनाइये जो हमारे देश में निकाले जाते हैं-

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

5 _____ 6 _____ 7 _____ 8 _____